SSLC EXAMINATION 2023 HINDI ANSWER KEY

1. गंगी का ।

2. **पटकथा (गंगी जोखू को पीने केलिए पानी देती है)**

स्थान - एक झोंपडी के अंदर ।
समय - दोपहर के दो बजे ।
पात्र - 1. गंगी, 40 साल की औरत, धोती और चोली पहनी है ।
2. जोखू, 50 साल का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।
दृश्य का विवरण - प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने के लिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद -

जोखू - बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।
गंगी - अभी लाती हूँ ।
जोखू - (लोटा मुँह से लगाकर) यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?
गंगी - दूर के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?
जोखू - मारे बास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !
गंगी - (लोटा नाक से लगाकर) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।
जोखू - (थोडी देर बाद) प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।
गंगी - मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ ।
जोखू - दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?
गंगी - ठाकुर और साह के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?
जोखू - हाथ-पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।
गंगी - आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।
जोखू - ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।
(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

3. वह + के = उसके

4. कलाम के दोस्त रणविजय को स्कूल में हिंदी भाषण प्रस्तुत करना है । लेकिन उसकी हिंदी उतनी अच्छी नहीं है । इसलिए उसकी मदद करने के लिए कलाम भाषण लिखकर देता है ।

5. **वार्तालाप - कलाम और रणविजय के बीच (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)**

कलाम - क्या हुआ दोस्त ? परेशान क्यों हो ?
रणविजय - कल स्कूल में हिंदी भाषण देने को कहा है ।
कलाम - वह अच्छी बात है न ?
रणविजय - पर तुम जानते हो न, मेरी हिंदी अच्छी नहीं है ।
कलाम - अरे छोडो यार ... मैं हूँ न? मैं तुझको भाषण लिख दूँगा ।
रणविजय - तुम ? तुम कैसे लिखोगे ?
कलाम - तुम्हें अपने दोस्त पर भरोसा है न? मैं लिख लूँगा ... पक्का ।
रणविजय - पर दोस्त ... मुझे कल तक भाषण चाहिए ।
कलाम - चिंता मत करो । रात को लिखकर सुबह दे दूँगा ।
रणविजय - ठीक है यार ।

अथवा

रपट तैयार करें

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : --------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसके लिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया । ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

6. मशहर
7. चाल़ी गीत गाने लगा ।

8. **सही लमिान करें ।**

मैनेजर चाल़ी को	- मंच पर लाया ।
माूँ की आिार्ज फटकर	- फ,सफ,साहट में बदल गई
।चाल़ी ने गीत गाना	- श,रू कर कदया ।
ध,न के अन,सार	- गाना सज गया ।

9. खेल घंटी के बाद
10. बच्चे स,रेंदर जी से डरते थे ।

11. **वाक्य लपरालमड की पूलता करें ।**

* बच्चे आते हैं ।
* बच्चे कक्षा में आते हैं ।
* बच्चे कक्षा में **समय पर** आते हैं ।
* बच्चे **गनणत की** कक्षा में समय पर आते हैं ।

12. अनिनाश ने
13. गानलब की गर्जल

14. **अलवनाश की डायरी (नाव यात्रा)**

तारीख : ....
आज रात को मैंने अपने नमत्र मोहन राकेश के साथ नाि लेकर भोपाल ताल की यात्रा की । नाि का मल्लाह था अब्द,ल जब्बार । सद़ी में भी िह केिल एक तहमद पहनकर नाि खे रहा था । मेरे अन,रोध पर मल्लाह ने गर्जल गाना श,रू ककया । ककतना मीठा था उनका स्िर ! स,नाने का अंदार्ज भी शायराना था । नाि खेते हुए िे झूम-झूमकर अत्यंत भाि,कता से गर्जलें स,ना रहे थे । उसके
गायन ने हमें ककसी दूसरी द,ननया में पहुचा कदया । रात की चाूँदनी, सद़ी, शांत िाताािरण, झील की निशालता आकद के साथ मल्लाह की गर्जलें यात्रा को और भी आकषषक बना कदया । सद़ी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मैंने अपना कोट उतारकर उसको दे कदया । उस कोट पहनकर कफर उसने गानलब की एक गर्जल भी स,नाई । क,छ देर और सैर करके ही हम लौटे । नमत्र के नलए यह यात्रा एक अलग अन,भि ही था । मल्लाह की गर्जलें अब भी कानों में गूूँज रही हैं । आज

अथवा

यात्रा के बारे में िेखक का पत्र

स्थान: ....
तारीख: ....

नप्रय नमत्र,

त,म कैसे हो ? क,शल हो न ? िहाूँ त,म्हारी क्या-क्या समाचार हैं ? मैं अब नमत्र अनिनाश के साथ भोपाल में हूँ । सक,शल मैं यहाूँ पहुच गया ।

स्टेशन पर मेरे नमत्र अनिनाश आया था । एक कदन उसके साथ रहने का ननणषय नलया । रात को हमने झील की सैर करने को सोचा । ग्यारह बजे ननकले । एक नाि नमल गई । उसमें घूमने लगे । बहुत-ही स,ंदर लग रही थी । तभी अनिनाश की इच्छा हुई कक कोई क,छ गाए । मैं गा नहीं सकता था । आनखर मल्लाह गाने को तैयार हुए । िे क,छ गर्जलें स,नाने लगे । बहुत मीठा था उनका स्िर । रात के साथ ठंड भी बढने लगी । लेककन लौटने का मन नहीं हुआ । क,छ देर कफर सैर की । चार बजे ही लौटे ।

अगली बार त,म भी मेरे साथ आओ । ऐसी यात्राएूँ बहुत ही आकषषक होती है । जिाब पत्र की प्रतीक्षा से,

त,म्हारा नमत्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेिा में,
नाम

15. सारे

16. **कलवतांश का आशय (क्या सारे मैदान, ... हस्बमामूि)**

प्रस्त,त पंक्तिय आध,ननक चहदी के प्रम,ख कनि श्री. राजेश जोशी की स,ंदर कनिता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कनि बाल मर्जदूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

बडे सबेरे ही काम पर चलनेि ाले बच्चों को देखकर कनि आशंककत होते हैं कक क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन एकाएक नष्ट हो गए हैं ? एसनलए बच्चे काम पर जा रहे हैं। अगर ऐसा है तो इस द,ननया में कफर क्या बचा है ? यह ककतना भयानक नस्थनत है ? भयानक होने पर भी छोटे-छोटे बच्चे अब भी काम के नलए जा रहे हैं। यह तो एक मामूली बात बन गई है। बालश्रम कानूनी अपराध होने पर भी क,छ बच्चे काम करने के नलए निि श हो गए हैं। उन्हें पढने का अिसर प्रदान करना सबका दानयत्ि है।

बालश्रम के निरुद्ध आिार्ज उठाने की प्रेरणा देनेि ाली यह कनिता नबलक,ल प्रासंनगक और अच्छी है। कनिता की भाषा अत्यंत सरल एि हमें चचनतत करने की प्रेरणा देनेि ाली है।

17. ग,ठली भैया से कहती है।

18. घरिाले ग,ठली को पराई मानकर उससे व्यिहार करते थे। लडकी के नलए जन्मगृह पराया है तो लडके के नलए अपना होगा। तो उस घर का देखभाल करना लडके का ही यानी भाई का ही दानयत्ि है।

19. **पोस्टर (संदेश) - ि डका-ि डकी का समान अलधकार है।**

ि डका-ि डकी का समान अलधकार है। विश्वास

तोड दो प,राना

नये सोच अपनाओ।

लडका - लडकी बराबर है

सब पढें ... सब बढें ... ।

परिार में लडका-लडकी का समान अनधकार दो।

बेटी बचाओ ... बेटी पढाओ ... ।

जनवरी 24, राष्ट्र ीय बालिका लदवस

बेटी है तो कल है ...

मत छीनो इनका अनधकार।

अथवा

लटप्पणी - असमानता समाज का अलभशाप

भारतीय संनिधान के अन,सार लडके-लडककयों को समानता का अनधकार है। लेककन लडककयों को अकसर भेदभाि सहना पडता है। यह आज के समाज की बडी समस्या है। लडकी को जन्म से लेकर अंत तक घर का काम करना पडता है। सभी कहते हैं कक सस,राल ही लडककयों का असली घर है। इसनलए उसे अपने घर में अन्य होने का अन,भि होता है। समाज में हो या परिार में हो लडकों के समान लडककयों को उनचत स्थान नहीं नमलता है। समाज में भी यही भेदभाि हम देख सकते हैं। उसे स्ितंत्र रूप से चलने का अनधकार भी नहीं है। उन्हें लडकों के जैसे पढाई की स,निधाएँ नहीं नमलती हैं। आज नारी समाज के सभी क्षेत्रों में कमषरत हैं। उसे समाज से अलग रखना उनचत नहीं है। गभष में ही लडककयों की हत्या करने का ननमषम व्यिहार भी कभी-कभी चलता है। यानी ि लडककयों को जन्म देना भी नहीं चाहते। लजककयों के प्रनत हीन भाि रखना ठीक नहीं है। लडका-लडकी एक जैसा है। लडककयों को समानता का अनधकार नमलना चानहए।